सप्तम् अध्याय

वातावरण शिल्प

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास और वातावरण शिल्प

आन्तरिक वातावरण

मनःस्थिति द्वारा वातावरण सृजन

वाह्य वातारण

प्रकृति चित्रण द्वारा वातावरण सृजन

समाज चित्रण द्वारा वातावरण शिल्प

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सप्तम् अध्याय

वातावरण शिल्प

चरित्र चित्रण द्वारा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन तो किया जा सकता है, लेकिन उसमें सत्यता, सजीवता एवं यथार्थता का बोध कराने के लिए वातावरण का यथार्थ चित्रण आवश्यक है। बिना किसी क्षेत्र, देश, समाज एवं जाति के रीति–रिवाजों, आचार–विचार, उसकी सभ्यता एवं सस्कृति, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के अंकन से चरित्र–चित्रण में यथार्थता का बोध नहीं कराया जा सकता; इसलिए कथानक में सजीवता लाने, सलक्षण तथा सुसंगत बनाने के लिए वाह्य परिस्थितियों का चित्रण आवश्यक है।

वातावरण उपन्यास का महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य तत्व है, जो पात्रों के चरित्र–चित्रण एवं कथा विकास में महत्वपूर्ण योग देता है। यह वह माध्यम है, जिसमें किसी वर्णित समाज की देशकाल एवं परिस्थितियों का वर्णन इस ढंग से किया जाता है कि रचना में सजीवता और यथार्थता आ जाती है। अर्थात वातावरण ही ऐसा तत्व है, जो रचना में सत्यता एवं यथार्थता का समावेश करता है। वातावरण को ध्यान में रखकर ही लेखक अपनी कल्पना को पाठकों के सामने प्रकट करता है ताकि पाठक कुछ देर के लिए ही सही उस रचना को यथार्थ एवं सत्य मानने लगता है। "उपन्यास सृष्टि को अधिक सजीव, सलक्षण तथा सुसंगत बनाने के लिए देशकाल अथवा वाह्य–परिस्थिति चित्रण का आधार लिया जाता है। अन्यथा पात्र केवल शून्य में खड़े से प्रतीत होंगे और मानवता की अनुरूपता न आ सकेगी।" [1] वातावरण के अन्तर्गत कथा के अनुसार तत्कालीन समाज की देशकाल एवं परिस्थितियों का अंकन किया जाता है। "वातावरण का अभिप्राय किसी देश, समाज एवं जाति के आचार विचार उसकी

1 'हिन्दी उपन्यास' : शिवनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ – 452

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सभ्यता एवं संस्कृति, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण है।"[1]

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास और वातावरण शिल्प : उपन्यासों के आधार पर ही उपन्यासों में वातावरण का सृजन भी होता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐतिहासिक वातावरण का सृजन होता है, यदि लेखक ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐतिहासिक वातावरण का निर्माण नहीं करेगा तो उपन्यास में स्वाभाविकता नहीं होगी, जिससे लेखक की अल्पज्ञता का आभास होता है। इसी प्रकार आंचलिक उपन्यासों में आंचलिक वातावरण, सामाजिक उपन्यासों में सामाजिक वातावरण और मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में मनोविश्लेषण प्रधान वातावरण का सृजन होता है। मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में वातावरण सृजन वाह्य परिस्थितियों, मनःस्थितियों एवं मनोविश्लेषण के आधार पर होता है। अर्थात लेखक वाह्य परिस्थितियों, परिवेश आदि का चित्रण करने के साथ–साथ व्यक्ति के अन्तर्जगत का चित्रण भी करता है। मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में वातावरण सृजन को दो भागों में बाँटा जा सकता है– आन्तरिक वातावरण व वाह्य वातावरण।

आन्तरिक वातावरण : आन्तरिक रूप से वातावरण सृजन के अन्तर्गत मानसिक वातावरण को शामिल किया जाता है। अर्थात पात्र की विभिन्न मनःस्थितियों द्वारा जो वातावरण सृजन होता है वह आन्तरिक वातावरण ही होता है। इसमें पात्र के अन्तर्जगत में विद्यमान विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों के फलस्वरूप उत्पन्न कुण्ठाओं का विश्लेषण होता है। इलाचन्द्र जोशी ने पात्र की विभिन्न मनःस्थितियों द्वारा आन्तरिक वातावरण का सृजन किया है।

'लज्जा' उपन्यास की नायिका लज्जा की मनःस्थिति का वर्णन सांध्यकालीन वातावरण द्वारा किया गया है– "संध्याकाल की इस विशेष घड़ी में ही कोई अलौकिक माया वर्तमान रहती है, या मेरी ही मानसिक अवस्था उस

1 'उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ' : डॉ. सुरेश सिन्हा, पृष्ठ – 97

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

समय विकृत हो गयी थी, मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकती; पर एक प्रकार की अभूतपूर्व चंचलता से मेरा हृदय आन्दोलित होने लगा।"[1] 'संन्यासी' में नन्दकिशोर का मनःस्थिति वर्णन इन पंक्तियों में किया है– "बहुत देर तक योगनिद्रा की–सी अवस्था में स्थिर, अचंचल बैठा रहा। आखिर पूर्व की ओर चन्द्रमा दिखाई दिया। ज्यों–ज्यों वह ऊपर चढ़ता गया, उसका प्रकाश भी रजतोज्जवल रूप धारण करने लगा। जो समस्या इस समय तक मेरे लिए एक भंयकर पहाड़ का रूप धारण किये थी, भय तथा संयम की जो जड़िमा आज जौंक की तरह मेरी छाती जकड़े थी, निमेष मात्र में कपूर की तरह विलीन हो गई।"[2]

'पर्दे की रानी' में निरंजना की मनःस्थिति का वर्णन किया है– "वास्तव में मुझे अपना अस्तित्व ही प्रकृति की एक विचित्र खाम–खयाली लगता था, न अपने अस्तित्व की कोई उपयोगिता मुझे दिखाई देती थी न सृष्टि के विपुल चक्र के साथ कहीं, किसी भी रूप में अपना सामंजस्य पाती थी। मैं किसी पुच्छल तारे के एक ऐसे विच्छिन्न खण्ड की तरह महाशून्य में निरूद्देश्य भटकती हुई अपने को मालूम कर रही थी।"[3] 'प्रेत और छाया' में अपने पिता से अपने जन्म की बात सुनकर पारसनाथ के मन में अपने पिता के प्रति घृणा और प्रतिहिंसा की भावना उत्पन्न होती है। "प्राथमिक स्तब्ध अवस्था के बाद पारसनाथ के भीतर जैसे जन्म–जन्मान्तर से संचित क्रोध और हिंसा की उन्मत्त तरंगें पागल गति से उमड़ती हुई, शेषनाग के सहस्र फनों की तरह फुफकार मचाती हुई, उसकी नाक के दो छिद्रों से होकर विषैली साँसे छोड़ने लगी। उस रात वह प्रायः एक बजे तक पलंग पर बंधनग्रस्त पागल भेड़िये की तरह छटपटाता हुआ करवटें बदलता

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 122

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 36

3 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 75

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

रहा। रह–रहकर कालकूट से भी अधिक तीव्र और उग्र विषयुक्त हाइड्रोजन से उसकी छाती बैलून की तरह फूल उठती थी–चरम विस्फोट के लिए।"[1]

'मुक्तिपथ' उपन्यास में राजीव की मनःस्थिति के चित्रण द्वारा वातावरण का सृजन किया गया है– "सड़ी–गली सभ्यता की विषैली साँसों से भाराक्रान्त वातावरण में उसका दम घुटा जा रहा था, पर उससे मुक्त होने का उपाय उसे नहीं सूझता था कोई जरिया नहीं आता था। कौन उबारेगा उसे इस बज्र–कठिन निष्ठुर, निर्मम दानवीय बंधन से?"[2] 'सुबह के भूले' में गिरिजा अर्थात गुलबिया की मानसिक स्थिति के वर्णन द्वारा अनेक स्थानों पर वातावरण का निर्माण किया गया है। दूध बेचने वाली की लड़की होने के कारण उसे सभी लोगों की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। उसकी इस मनःस्थिति के वर्णन द्वारा वातावरण का सृजन इस प्रकार किया गया है– "पलंग पर लेटे–लेटे बहुत देर तक गिरिजा यही सोचती रही कि वह दूध बेचने वाली की लड़की है और समाज में कोई स्थान नहीं है, जहाँ उसने मोहवश, जवानी के मद से अंध होकर, दुनिया के तौर–तरीकों से अपरिचित रहने के कारण अपने लिए स्थान बनाना चाहा था।"[3] 'त्याग का भोग' में वीरेन्द्र की मृत्यु के बाद रंजन की मनःस्थिति द्वारा वातावरण का सृजन हुआ है– "मेरी सोयी हुई आत्मा किन्हीं अज्ञात मार्मिक आघातों से रह–रहकर चौंक उठती थी, लोहार की भट्टी में गरम किये हुए लाल–लाल हथौड़ों की निर्मम चोटों से मेरे मन के वर्षों से जंग खाये हुए लोहे के दरवाजे हिलने लगे थे।"[4]

'जहाज का पंछी' में विभिन्न स्थानों पर नायक की मानसिक स्थिति के वर्णन द्वारा वातावरण का सृजन हुआ है– "एक अनोखी उथल–पुथल सी मेरे भीतर मच रही थी और एक विकट विद्रोह का सा भाव जाग रहा था। वह भाव

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 48–49

2 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 27

3 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 123

4 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 335

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

इतना अस्पष्ट था कि मैं ठीक से कुछ समझ ही नहीं पा रहा था। वह विद्रोह क्यों और किसके प्रति है, यह जानना मेरे लिए अत्यन्त कठिन प्रायः असम्भव सिद्ध हो रहा था।"[1] 'ऋतुचक्र' में दादा की मानसिक अवस्था का वर्णन कर वातावरण का सृजन इस प्रकार हुआ है– "सामने की रक्तिम चोटियों के उस पार से आता हुआ एक अपूर्व मादक रस, उनके चारों ओर के वातावरण में झरर–झुरट–झुमुर–झुमुर बरसता हुआ, उनके शरीर और मन की सारी छोटी–मोटी स्थूलता को गला रहा है और जीवन की सारी छोटी–मोटी गलतियों को गला–कर, सारे अस्तित्व को ही वायु से भी हल्का करके, किसी अज्ञात पुलकानुभूति के लोक की ओर उड़ाये लिये जा रहा है।"[2] 'भूत का भविष्य' में राकेश और नन्दा की विचित्र मानसिक स्थिति के चित्रण द्वारा वातावरण का निर्माण किया गया है। राकेश सोचता है– ".....अब उसका भविष्य क्या है और कितना शेष रह गया है? गंगा और यमुना के मिलन की इस पुण्य–स्थली में पहुँचते ही उसे निश्चय ही भव–सागर के अशेष नारकीय बन्धनों से मुक्ति मिल जायेगी। क्योंकि अब इस मुक्ति के बिना उसे पल–पल की अपार यातनाओं से छुट्टी के लिए दूसरा रास्ता ही क्या रह गया है?"[3]

वाह्य वातावरण : वाह्य वातावरण में समाज, जाति की विशेषताओं एवं विभिन्न प्राकृतिक दृश्यों का सहारा लिया गया है। वाह्य वातावरण के द्वारा ही कथानक में वास्तविकता का आभास होता है, क्योंकि आन्तरिक वातावरण तो केवल व्यक्ति की आन्तरिक स्थिति के चित्रण तक ही सीमित रहता है; लेकिन वाह्य वातावरण देशकाल की यथार्थ परिस्थिति का अंकन करने में सहायक होता है। प्रकृति के विभिन्न प्रतिरूप, प्रातः, सांध्य, रात्रि, विभिन्न ऋतुओं, महीनों का वर्णन कथा में सजीवता लाने के लिए अत्यावश्यक है। वाह्य वातावरण का सृजन

---

1 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 342

2 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 2

3 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 45

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

दो रूपों में हुआ है– पहला प्रकृति चित्रण द्वारा वातावरण सृजन और दूसरा समाज चित्रण द्वारा वातावरण सृजन।

प्रकृति चित्रण द्वारा वातावरण सृजन : प्रकृति चित्रण के अन्तर्गत प्रकृति के विभिन्न प्रतिरूपों, प्राकृतिक दृश्यों, प्रातः मध्यान्हः, संध्या, रात्रि, विभिन्न ऋतुओं आदि के चित्रण द्वारा वातावरण का सृजन किया गया है। 'लज्जा' उपन्यास की नायिका लज्जा की मनःस्थिति के चित्रण द्वारा सांध्यकालीन वातावरण का सृजन किया गया है– " सांध्यकालीन की इस घड़ी में ही कोई अलौकिक माया वर्तमान रहती है या मेरी ही मानसिक अवस्था उस समय विकृति हो गई थी, मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकती; पर एक प्रकार की अभूतपूर्व चंचलता से मेरा हृदय आन्दोलित होने लगा।"[1] 'संन्यासी' में प्राकृतिक वातावरण में परिवर्तन के साथ–साथ नन्दकिशोर की मनःस्थिति भी परिवर्तित होते रहती है। कभी उसका मन आशा एवं उल्लास से परिपूर्ण रहता है तो कभी उसे सारा वातावरण ही भयावह और विषमय लगने लगता है। "सारे मकान का वातावरण मेरे लिए ऐसा भयावह और विषम हो उठा था कि मेरा दम घुटा जा रहा था।"[2] 'पर्दे की रानी' में झरने के सुन्दर दृश्य के चित्रण द्वारा निरंजना की मानसिक स्थिति को प्रकट किया गया है– "मुझे ऐसा लग रहा था जैसे निर्झर की धाराएँ केवल वाह्य–प्रकृति में ही नहीं फूट रही हैं, बल्कि मेरे भीतर की प्रकृति की सहस्रों अन्धगुहाओं से भी अनन्त स्रोत मुक्त वेग से उमड़ चले हैं।..... ...एक आकस्मिक आनन्दातिरेक की अनुभूति मेरी आत्मा के कण–कण में व्याप्त हो गई। मुझे ऐसा अनुभव होने लगा जैसे मेरे अन्तर की सारी विकृतियाँ उस झरने की बहुविध धाराओं के साथ धुल कर बही चली जा रही है।"[3]

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 122

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 127

3 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 175

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'प्रेत और छाया' में वातावरण की भीषणता द्वारा पारसनाथ की मनःस्थिति को प्रकट किया गया है– "बाहर वर्षा ने भीषणतम रूप धारण कर लिया था। ऐसी प्रलयवृष्टि पारसनाथ ने पहाड़ में अवश्य देखी थी; पर देश में प्रकृति का यह कोप उसके लिए एक नया अनुभव था। ऐसा अन्धवेग से पानी बरस रहा था, जैसे वह सोचता हो कि आज न बरसने से फिर कभी नहीं बरस पावेगा। शाम से अभी तक एक–एक क्षण के लिए भी उसका तार नहीं टूटा था।"[1] रात्रि के गहन अन्धकार में उसके मन में भ्रम की स्थिति उत्पन्न होने लगती है– "बाहर अनन्त अन्धकार और भीतर अनन्त अन्धकार चारों ओर प्रलय–वर्षा का नाश–नृत्य, किसी प्राणी के अस्तित्व का सूचक कोई शब्द कहीं नहीं और उस मृत्यु से भी कराल कालिमा से पुते हुए अन्ध–पट के भीतर एक तरूण और एक तरूणी एक दूसरे से सटे हुए ! इतने दिनों से तृषित और क्षुधित प्राणों की उद्दाम उच्छृंखल आकांक्षा की पूर्ण पूर्ति में तब कौन–सी रूकावट शेष रह गई है?"[2]

'मुक्तिपथ में निस्तब्ध वातावरण द्वारा सुनन्दा की ध्यानमग्न अवस्था को चित्रित किया है– "उस निर्जन दुपहरी में, सूने बंगले की एकांत स्तब्धता में वह ध्यानमग्न नारी श्वेत वस्त्र से आवृत्त होकर, प्रियतम की प्राप्ति के लिए शिवमन्दिर में तपस्या करने वाली महाश्वेता की तरह उसे लग रही थी।"[3] संध्याकाल के वातावरण में सुनन्दा का चित्रण इस प्रकार किया है– "एक दिन संध्या के समय इसी तरह वाण–बिद्ध होकर, भग्न हृदय ले कर, छिन्न–लतिका की तरह अपने कमरे में फर्श पर पड़ी हुई थी किवाड़ यों ही फेरे हुए थे, भीतर से चिटखनी बन्द नहीं थी।"[4] 'निर्वासित' में उपन्यास के प्रारम्भ में ही उपन्यासकार वातावरण का स्पष्ट संकेत दे देता है– "गर्मियों के दिन थे। दिन

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 127

2 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 133

3 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 84

4 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 157

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

भर कुम्भीपाक की गर्मी से सबको झुलसाने के बाद सूरज डूब चुका था, पर लू की लपटें अब भी थपेड़े मार रही थीं।"[1] प्राकृतिक वातावरण महीप के अन्दर विद्यमान कवि हृदय को जाग्रत करने लगता है– "पूर्व आकाश में पूर्ण चन्द्रमा धीरे–धीरे ऊपर को उठता चला जा रहा था, यमुना की नील लहरियों पर उसका प्रकाश चाँदी बिखेर रहा था। चारों ओर अपेक्षाकृत प्रशान्त वातावरण छाया हुआ था। केवल पूर्ण चन्द्र के दुर्निवार आकर्षण से नदी की उच्छृंखल तरंगें उद्दाम वेग से उछलती हुई बीच–बीच में एक दूसरे से टकराकर कभी भौतिक अट्टाहास करती हुई ठहाका मार उठती थी और कभी विचित्र और रहस्यमय व्यंग्य के स्वर में खिलखिला उठती थी। दोनों प्रकार की आवाजें महीप को किसी अज्ञात और मार्मिक महत्व से भरी मालूम हो रही थी।"[2] 'सुबह के भूले' में प्राकृतिक वातावरण द्वारा गिरिजा के अहं को व्यक्त किया गया है– "सामने समुद्र के पश्चिमी क्षितिज पर सूर्यास्त हो रहा था। समुद्र की सैकड़ों लहरें उमड़–उमड़ कर उफन–उफन कर, शेषनाग के सहस्रों फनों की तरह फुफकारती हुई तट से टकरा रही थी– जैसे मानव जाति द्वारा मानव के अपमान से क्षुब्ध होकर रोषपूर्वक गरज रही हो।"[3] वातावरण परिवर्तन के साथ–साथ उसके भावों मे भी परिवर्तन होते रहता है– "संध्या के अन्धकार की तरह ही गिरिजा के मुख का अंधकार बढ़ता चला जा रहा था।"[4]

'त्याग का भोग' में प्राकृतिक वातावरण के सृजन द्वारा पात्र की स्वाभाविकता को प्रकट किया गया है– "चारों ओर पूर्णप्राय चन्द्रमा की रूपहली चाँदनी छिटक रही थी। झील पर उठने और गिरने वाली हिलोरें टूट–टूटकर आलोक रेखाओं के रूप में बिखर–बिखर पड़ती थी। भाभी मौन भाव से मेरी बगल में बैठी हुई थी। संहसा जैसे उनका ध्यान भंग हुआ और उन्होंने प्रस्ताव

---

1 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 1

2 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 163

3 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 120

4 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 120

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

किया कि नाव पर झील की सैर की जाय।"[1] प्राकृतिक वातावरण द्वारा रंजन की दमित काम–वासना का प्रकटीकरण हुआ है– "झील को चारों ओर से घेरने वाली सड़क पर जलती हुई बत्तियों की कतार का सम्मिलित प्रतिबिम्ब, नाव के डाँडों की छपाक–छपाक शब्द, रूपहली लहरों की एक दूसरे को आलिंगनपाश में बद्ध करने की आकुलता, सब मिलकर जीवन को एक दूसरे ही स्वरूप को मेरी– और शायद भाभी की भी आँखों के आगे रख रहे थे। ज्यों–ज्यों नाव आगे बढ़ती गयी त्यों–त्यों किनारे पर प्रतिबिम्बित कृत्रिम प्रकाश हटता चला गया और बिखरी हुई विशुद्ध रूपहली माया के प्राणों के तारों को नये–नये स्वराघातों से झंकृत करने लगी।"[2] 'जहाज का पंछी' में प्राकृतिक वातावरण के सृजन द्वारा नायक की मनःस्थिति का वर्णन किया गया है– "सूरज पच्छिम में कुछ देर से घिरे हुए गाढ़े काले बादल जलकर एकदम लाल हो गये थे, जैसे कोयलों के आकाशव्यापी गोदाम में आग लग गई हो और सब कोयले सहसा एक साथ दहक उठे हों। उनकी रक्तिम आभा नदी पर पड़कर तेज हवा के कारण सौ–सौ उछली हुई तरंगों से प्रतिबिम्बित होकर पिघलती हुई आग की तरह दिखाई दे रही थी।"[3] इसी प्रकार प्राकृतिक वातावरण में नायक की दमित कामचेतना जाग्रत होने लगती है– "फागुन का महीना था। आम के पेड़ों में गुच्छ–गुच्छ बौरों की बहार दिखाई देती थी। नीम की पुरानी पत्तियाँ कस्त फागुनी हवा के हिलाकोरों से नाचती–गाती हुई धरती पर गिरती जाती थी, जैसे नई पत्तियाँ नीचे गिरती हुई जमीन पर बिछ जाती थीं, जैसे बसन्त के शुभागमन पर पाँवड़े बिछा रही हो।"[4]

'ऋतुचक्र' उपन्यास में प्रकृति चित्रण द्वारा दादा अर्थात मिलन कुमार चटर्जी की दमित कामनाओं का मनोविश्लेषण हुआ है। "नीचे, दाँए और बाँए

---

1 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 282

2 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 283

3 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 143–144

4 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 396–397

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

दोनों ओर फैली हुई, बाँज और देवदारू के सघन पूंजों से हरीभरी दो घाटियाँ जैसे एक नीरव निराली और कटीली पुलक से सिहरती हुई–सी, अलग–अलग, दिशाओं से आकर, एक–दूसरे से प्रायः मिलती हुई, एक चौड़ा त्रिकोण बना रही थी। बीच में ऊपर से आता हुआ एक नाला, ज्यामिति के लंब की तरह उस त्रिकोण को बीचों–बीच विभक्त कर रहा था।"[1] प्रकृति के स्वरूप में वे एक नारी की कल्पना करते हैं– "पलक मारते–मारते पश्चिमी क्षितिज की स्वर्णिम रेखा ताँबे में पिघलकर नीचे गिर गयी। उत्तर के सफेद पिरामिड पर अब सोने के बदले ताँबा जमने लगा था। दादा उस ओर एकटक देख रहे थे, सब कुछ अनुभव कर रहे थे। केवल एक अनुभूति को छोड़कर कमर तक आधा पिरामिड ताँबे का, कमर के नीचे सफेद लहंगा और सिर की चोटी पर सोने की ओढ़नी का आभास, वह सारा पिरामिड जैसे महानारी बन गया था।"[2]

समाज चित्रण द्वारा वातावरण सृजन : सामाजिक वातावरण का उपयोग चरित्रों को प्रकट करने एवं कथावस्तु की प्रभावशीलता में वृद्धि करने के लिए किया जाता है। डॉ. सुरेश सिनहा लिखते हैं– "कथावस्तु की प्रभावशीलता को गहन रूप प्रदान करने एवं प्रभावग्रहिता की अभिवृद्धि के लिए सामाजिक वातावरण का उपयोग किया जाता है।" [3] मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में सामाजिक वातावरण के माध्यम से मानव जीवन का मनोविश्लेषण होता है। सामाजिक वातावरण के अन्तर्गत समाज की वेशभूषा, भाषा, रीतिरिवाज, संस्कृति, व्यापार, राजनैतिक चेतना, नारी–पुरूष सम्बन्धों, सामाजिक प्रथाओं, विसंगतियों आदि का चित्रण होता है। इलाचन्द्र जोशी ने प्राकृतिक वातावरण के साथ–साथ सामाजिक वातावरण का सृजन भी किया है।

---

1 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 10–11

2 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 12–13

3 'उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ' : डॉ. सुरेश सिनहा, पृष्ठ – 98

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'लज्जा' उपन्यास में सामाजिक वातावरण के सृजन द्वारा पात्र पर सामाजिक वातावरण से पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों का चित्रण हुआ है। उपन्यास में जलियाँवाला बाग की घटना लज्जा और राजू के हृदय में अपना गहरा प्रभाव छोड़ती है। "जलियाँवाला बाग की रक्तोत्तेजक घटना के कारण देश–भर में आत्मबलिदान का रव गूँज डठा। अलकापुरी के स्वप्नों से मोहाच्छन्न मेरे नववसंत–मय हृदय में इस घटना से कुछ आघात पहुँचा; पर बहुत हलका। किंतु राजू एकदम अग्निमय हो उठा। उस समय उसकी अवस्था प्रायः चौदह वर्ष की होगी।"[1] लज्जा के अन्दर की दमित काम–भावना विलासमय वातावरण में जाग्रत होने लगती है– "अलबेली युवतियाँ नाना रंगों के मनोहर वस्त्र पहनकर आभूषणों से सज्जित होकर, बालों को बिखेरकर, पौडर रंजित होकर, विद्युत के उज्ज्वल प्रकाश से प्रदीप्त और प्रफुल्लित होकर, सुकोमल और सुकुमार अंगों को संचालित कर, कोकिल–कंठों से स्वर–लहरी तरंगित कर दर्शक मंडली को मंत्र–मूढ़ करने लगी।"[2] निम्नवर्गीय समाज का वातावरण सृजन इस प्रकार किया है– "हम लोग गाड़ी से उतरकर गली के भीतर घुसे। मकानों के नीचे नाली से होकर गंदा पानी बह रहा था। बड़ी बद्बू आती थी। मैंने रूमाल से नाक ढक ली।"[3] पाश्चात्य स्वच्छन्द वातावरण को देखकर लज्जा के मन में भी उस वातावरण में डूबने की इच्छा होने लगती है– "आज इस उद्दाम चंचल प्रेम के उन्मुक्त, बंधनहीन प्रवाह में संशयहीन होकर बह जाने की उत्कट इच्छा मेरे मन में उत्पन्न हुई।"[4]

'संन्यासी' में इलाहाबाद स्टेशन के चित्रण द्वारा वातावरण का सृजन इस प्रकार हुआ है– "मैं अन्यमनस्क होकर शान्ति के साथ मन्थर गति से चलने लगा। कुछ दूर आगे बढ़ने पर तीन–चार होटल वालों ने मुझे आ घेरा। प्रत्येक

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 15

2 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 70–71

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 78

4 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 97

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

व्यक्ति अपना–अपना छपा कार्ड दिखाकर अपने–अपने होटलों की तारीफ के पुल बाँधने लगा और मुझसे वहाँ ठहरने के लिए दृढ़तापूर्वक अनुरोध करने लगा।"[1] सिनेमा द्वारा वातावरण सृजन से नन्दकिशोर की दमित चेतना उजागर होती है, "बीसवी सदी के सभ्य स्त्री–पुरूषों के वैचित्र्यपूर्ण भ्रमण और उस भ्रमण के फलस्वरूप एक बर्बर युवक के साथ एक नवीन गोरी ललना का प्रेम और प्रेम के कारण उस गोरी युवती के गौरांग प्रेमी की प्राणान्तक ईर्ष्या और अन्त में बर्बर प्रेमिका की विजय। .....उसका वह अंग स्पर्श आज मुझे एक निराली ही अनुभूति से पुलक चकित कर रहा था। मेरा रोम–रोम एक अपूर्व सुखोन्माद के घर्षण से आकुल हो रहा था।"[2] सामाजिक संकीर्णता का वातावरण भी उपन्यास में प्रकट हुआ है– "तुम्हारे साथ रहने से वह समाज से अलग कर दिया जायेगा और उसके साथ ही कुटुम्ब के सभी लोगों का बहिष्कार हो जायेगा। तुमकों मालूम होना चाहिए कि हम लोग कनौजिए हैं और हमारे यहाँ सामाजिक विधान कड़ा है। कुछ ही समय बाद मेरी लड़कियाँ विवाह के योग्य हो जायेंगी। समाज अगर हम लोगों का बायकाट कर देगा तो उनका क्या हाल होगा।"[3]

'पर्दे की रानी' में पूँजीवादी परिवेश का अंकन हुआ है। उपन्यास की नायिका निरंजना प्रारम्भ से ही विलासितापूर्ण वातावरण में रही है– "जिस मकान में मैं माँ के साथ रहती थी वह काफी बड़ा, सुन्दर और सुसज्जित था,.....मेरा विश्वास था कि रूपये–पैसे की कोई कमी उसके पास नहीं है।"[4] उपन्यास में अभिजात्य वर्गीय वातावरण का सृजन भी हुआ है– "हमारे घर पर नित्य अतिथि–अभ्यागतों की भीड़ लगी रहती थी, जिनमें पुरूषों की संख्या ही अधिक रहती थी। जितने भी व्यक्ति माँ से मिलने आते थे, उनमें तथा कथित बड़े

---

1 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 54

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 85–86

3 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 122

4 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 36

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

आदमियों की संख्या ही अधिक रहती थी।"[1] होटल के विलासमय वातावरण के कारण निरंजना की वासना भी भड़क उठती है– "इन्द्रमोहन जी बाँया हाथ मेरी कमर पर और दाहिना हाथ कंधे पर रखकर एक स्वाभाविक लालसा–जनित उल्लास से मेरी आँखों की ओर देखते हुए पानी में मछली की तरह तैर रहे थे। मैं जैसे जान–बूझ कर उन्मादिनी बनी हुई थी, और उस क्षणिक रंग में अपने को पूर्णतया रंगाकर इन्द्रमोहन की मस्ती को सुलगा रही थी।"[2]

'प्रेत और छाया' में सामाजिक वातावरण सृजन द्वारा पारसनाथ का मनोविश्लेषण किया गया है। वह मानसिक रूप से अस्वस्थ है। उसके मकान की स्थिति एवं वातावरण द्वारा उसके मानसिक रूग्णता को जाना जा सकता है– "मकान के पास पहुँचने पर पासनाथ ने एक चौराहे पर ताँगे को खड़ा करवाया और किराया चुका कर एक गली के भीतर चला गया। इस गली के बाद वह बाँयी ओर एक दूसरी गली की ओर मुड़ा, जो पहली वाली गली से तंग थी और कुछ दूर जाने के बाद दाहिनी ओर को मुड़कर एक तीसरी गली में घुसा, जो पिछली दोनों गलियों की अपेक्षा अधिक तंग और अँधेरी थी, वैसी ही गंदी भी थी। इस गली के एक छोटे से मकान में पारसनाथ रहता था। गली की दोनों ओर दो नालियाँ मोरियों के अविरत झरना–प्रवाह से प्रतिपल 'पुलकापुल' होकर निरंतर कल–कल शब्द से बहती रहती थी। जब पहले–पहल पारसनाथ उस मकान में आया था, तो उस गली से आते हुए रूमाल से अपनी नाक ढक लेता था; पर बाद में धीरे–धीरे आदत पड़ गई।"[3] पारसनाथ की आन्तरिक स्थिति का वर्णन उसके आस–पास के वातावरण द्वारा किया गया है– "उसके पड़ोसियों का दैनिक जीवन उसके अपने आंतरिक जीवन से बहुत मेल खाता हुआ–सा मालूम होता। इस देश में भटका हुआ पंछी जिस प्रकार अपने स्वजातीय पक्षियों के बीच

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 37

2 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 186

3 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 33

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

आकर चैन की साँस लेता है–पारसनाथ भी उस गली में 'अपनों' के बीच में एक नीड़, बल्कि बिल का अनुसंधान करके परम संतुष्ट था।"[1]

'निर्वासित' मध्यवर्गीय समाज की कहानी होने के कारण इसमें मध्यवर्गीय सामाजिक वातावरण की अभिव्यक्ति हुई है। 'निर्वासित' के प्रारम्भ में ही उपन्यासकार स्पष्ट करता है कि 'वर्तमान उपन्यास की कथा का आरंभ उस समय से होता है जब द्वितीय महायुद्ध अपनी प्रारंभिक अवस्था में था।"[2] द्वितीय स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए उपन्यासकार बताता है– "इसके बाद उपन्यास की कहानी जब द्वितीय स्थिति पर पहुँचती है, तब एक ओर सन् बयालिस के अगस्त आन्दोलन का दमन–चक्रपूर्ण सघन वातावरण भारतीय आकाश को भाराक्रात किये हुए था।"[3] इसी प्रकार तीसरी स्थिति के बारे में वे लिखते हैं– "द्वितीय महायुद्ध तो समाप्त हो जाता है, किन्तु समाप्ति के साथ ही अणुबम के अविष्कार द्वारा तृतीय महायुद्ध के छायापात की सूचना भी दे जाता है।"[4] इन्हीं युगीन परिस्थितियों में उपन्यास के नायक की संघर्षमय स्थिति का वर्णन उपन्यास में हुआ है।

'मुक्तिपथ' में सामाजिक वातावरण सृजन द्वारा विभिन्न व्यक्तिगत समस्याओं एवं कुण्ठाओं का चित्रण किया गया है। स्वतंत्रता के बाद की विभिन्न समस्याएँ इसमें उजागर हुई हैं। बेकारी से त्रस्त नवयुवक राजीव के माध्यम से समाज की स्थिति का चित्रण किया गया है– "प्रतिक्षण जब असंख्य, दलित, पिष्ट आत्माओं के भीतर दैन्य और विद्रोह का संघर्ष चल रहा है, जब अनगिनत पेटों के भीतर सुबह की रोटी हजम होने के पहले ही रात की रोटी की चिन्ता अपना तूफानी चक्र चलाने में व्यस्त है, तब इस युवती की आत्म–तृप्ति भरी

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 34

2 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, भूमिका

3 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, भूमिका

4 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, भूमिका

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

मुस्कान की उपयोगिता क्या है?"[1] बाहर का समाज उसे विभिन्न बंधनों से जकड़ा हुआ लगता है– "बाहर आने पर उसने युद्ध से ध्वस्त, अभावग्रस्त, सर्वव्यापी, नैतिक पतन और भ्रष्टाचारिता के रोग के शिकार मानव जीवन का जो रूप देखा उससे उसके मन में सन्देह होने लगा कि वह कठोर बन्दी जीवन से छुटकारा पा कर मुक्त मानवता के बीच में आया है, उसे लगा कि बाहर भी मानव पग–पग में बंधनों से जकड़ा हुआ है।"[2] तत्कालीन समाज का वर्णन राजीव इन शब्दों में करता है– "समाज के निम्नतम् स्तर में अवस्थित उत्पन्न छोटी–मोटी मछलियों को उनसे कुछ बड़ी मछलियाँ निगलने की धुन में हैं, उन किंचित बड़ी मछलियों को उनसे भी बड़ी मछलियाँ निगले जा रही हैं, उन्हें और बड़ी मछलियाँ चबा जाती हैं और अंत में बड़े–बड़े मगर–मच्छ उन सबको अपने वृहत पाचन तंत्र में डाल कर हजम कर रहे हैं।"[3] समाज में विधवाओं की दयनीय दशा का वर्णन भी उपन्यास में हुआ है– "असहाय विधवाओं को, परलोक के अनिश्चित बैंक में पूँजी जमा होते चले जाने के प्रलोभन द्वारा, इस लोक के निश्चित मानवीय अधिकारों से वंचित किया जा रहा है। अँधे समाज की असंख्य मूर्खताओं में से यह मूर्खता अभी तक एक विशिष्ट रूप धारण किए है।"[4]

'सुबह के भूले' में सामाजिक वातावरण के परिपार्श्व में निरंजना का मनोविश्लेषण हुआ है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही बम्बई नगर के उत्तरी छोर में स्थित नदी, झोपड़ियों के वर्णन द्वारा वहाँ का वातावरण प्रस्तुत किया गया है– "उस नयी बस्ती की सीमा पर बहने वाली घोर दुर्गन्धयुक्त गंदी नाली के उस पार, टीन के शेडों या शेडनुमा छोटे–छोटे मकानों की एक छोटी–सी कतार दिखायी देती है।"[5] गुलबिया के अन्दर हीनता की भावना है। फैशनेबल समाज

---

1 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 7–8

2 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 26

3 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 117

4 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 42

5 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 1

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

के पोशाक–पहनावा और रंग–ढंग के कृत्रिम कलात्मक ढंग की रंग–बिरंगी रेशमी साड़ियाँ और उसी से मिलते–जुलते ब्लाउज पहले थी, उनमें से अधिकांश के हाथों में और कानों में कीमती जवाहरात से जड़े, हलके किस्म के आभूषणों से सुसज्जित थी पौडर और क्रीम के अत्यधिक प्रयोग से सबके मुख चमक रहे थे और लिपिस्टिक की रंगीनी होठों में रक्त–विकार का सा भ्रम उत्पन्न करती थी, क्यूटेक्स से रंगे हुए बड़े–बड़े नाखून, मानवीय अवचेतन मन में दबी हिंसक भावनाओं को जैसे समूर्त रूप दे रहे थे।"[1] इस फैशनेबल समाज की वास्तविकता का चित्रण उपन्यास में हुआ है– "हमारे देश के तथाकथित फैशनेबुल समाज का दृष्टिकोण बड़ी ही छिछला, बहुत ही संकीर्ण होता है। वे एक नकली दुनिया के नकली ही तौर–तरीकों की बंदिशों से घिरे रहते हैं। मनुष्य की वास्तविक पहचान उन्हें नहीं है, उसके व्यक्तित्व के भीतरी रूप की न तो वे पहचान ही पाते हैं, न पहचानने की रूचि ही रखते हैं।"[2]

'त्याग का भोग' में नृपेन्द्ररंजन के व्यक्तित्व को सामाजिक वातावरण के सृजन द्वारा उद्‌घाटित किया है। सम्पूर्ण उपन्यास में बुर्जुवा संस्कारों के आधार पर वातावरण सृजन कर विभिन्न सामाजिक विसंगतियों का चित्रण किया गया है। कलकत्ता के समाज का चित्रण कर यथार्थवादी वातावरण उत्पन्न किया गया है– "यहाँ के जीवन की व्यक्तता, कोलाहल, भीड़–भभ्भड़, ठेलमठेला ये सब जीवन के एक–दूसरे ही घोर यथार्थवादी पहलू से परिचित कराते हैं। आधुनिक युग के यथार्थवादी जीवन के दो सिरे शोषक और शोषित के बीच मुठभेड़ के अखाड़े कलकत्ते की ही तरह के बड़े शहर होते हैं, वह भी एक महान दृश्य होता है। आकस्मिक मृत्यु की घटनाओं, अकारण और सकारण हत्याओं, जीवन संघर्ष के अग्निकुण्ड में निर्द्वन्द कूदने वाले अपराधियों, साहसी अथवा दुस्साहसिक व्यक्तियों, क्रान्तिकारियों, अपने और समाज के विरूद्ध विद्रोह करने वालों का जो ताँता यहाँ प्रतिक्षण लगा रहता है, इस युग के जीवन का चरम विकसित रूप

---

1 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 103–104

2 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 119

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

वही है।"[1] रंजन तत्कालीन राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के सम्बन्ध में कहता है– "आज सारे राष्ट्रीय (और अन्तर्राष्ट्रीय) वातावरण में अंतर्विरोध, अन्तर वैषम्य, अव्यवस्था अशांति, असंतोष और उलझनों का तुमार बँधा हुआ है।"[2] अकाल के दिनों में तत्कालीन समाज का पूँजीवादी वर्ग विलासिता में डूबा रहता है– "भीतर आन्दोलनरत और विलासिता में गले–गले डूबे हुए नर–नारियों का मेला और बाहर नंगों और भूखों का ठेलमठेला यह ऐसा चुभता हुआ विरोधाभास था कि उसके प्रति एकदम उदासीन रह सकना असंभव था।"[3] उपन्यास में अकाल का वीभत्स वातावरण प्रस्तुत किया गया है– "एक ओर 'भूख! भूख!' और "अन्न! अन्न!" की मर्मभेदी पुकार मची हुई थी और दूसरी ओर हैजे के शिकार जहाँ–तहाँ जमीन पर मृत अथवा मृतप्राय अवस्था में लेटे हुए पड़े थे। मरभूखों के पास शरीर को ठीक से ढकने के लिए प्रर्याप्त वस्त्र नहीं था; मुख एकदम सूखा हुआ, प्रेतलोक के अस्वाभाविक प्रकाश से चमकती हुई आँखें, धँसी हुई, गालों की हड्डियाँ उभरी हुई, छाती की पसलियाँ कंकाल की तरह बाहर को निकली हुई और पेटों में चीमड़ पड़े हुए थे। कोठी के अहाते में तिल–भर भी स्थान ऐसा नहीं था जो मरभूखों से खाली हो।"[4] अकाल के दौरान की चोर–बाजारी का चित्रण किया है– "सरकार की ओर से जो नाममात्र की राशन की व्यवस्था हुई थी वहाँ भी चोर–बाजारी आरम्भ हो गयी थी, केवल मुट्ठी भर लोग लड़–झगड़कर राशन का गल्ला, जिसमें एक तिहाई अनाज, एक–तिहाई भूसी और एक–तिहाई कंकर–पत्थर मिले होते थे, पा जाते थे, शेष सभी रह जाते थे। राशन के कर्मचारी बराबर यह कहकर टाल देते थे कि स्टाक खतम हो गया है और माल आने वाला है।"[5]

---

1 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 195

2 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 230

3 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 405

4 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 405–406

5 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 406

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'जहाज का पंछी' में नायक के माध्यम से युगीन समाज की विभिन्न विकृतियों का चित्रण कर वातावरण कर सृजन किया गया है। नायक को जिस गली में शरण मिलती है, उसका वर्णन इस प्रकार किया है– "कलकत्ता महानगरी के इस नरक में, गन्दगी को भी गन्दा करने वाले इस घूरे में सभ्य संसार की इस फैशन की रंगीनी के आवरण के भीतर मानव–जगत के मर्म में छिपे इस कोढ़–केन्द्र में।"[1] समाज की विषम सामाजिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न अपराधों एवं दुष्कमों का चित्रण किया गया है– "समाज में प्रतिदिन जो अपराधों और दुष्कर्मों की संख्याएँ बढ़ती चली जा रही हैं, उसका प्रधान कारण आज के युग की यही सहानुभूति रहित समवेदनाशून्य प्रवृत्तियों, विषम सामाजिक परिस्थितियों और सामूहिक भ्रष्टाचार ही है।"[2] वेश्या समाज का वर्णन इस प्रकार किया गया है– "दोनों ओर स्थान–स्थान पर युवतियाँ गली की गन्दी नाली के ऊपर 'क्यू' में खड़ी थी, जगह–जगह उसी तरह के संकेत उसी तरह की पारस्परिक होड़, आत्म विज्ञापन के उद्देश्य से की जाने वाली दयनीय चेष्टाएँ और आतंक उपजाने वाले हाव–भाव।"[3] मिस साइमन के चकले के चित्रण द्वारा चकले का वातावरण सृजित किया है– "मैं दो कदम बढ़ा हूँगा कि बाई ओर वाले कमरे के दरवाजे से, जो गुलाबी रंग के परदे से ढका था, सहसा एक–एक करके सात लड़कियाँ बाहर आयी और कतार बाँधकर खड़ी हो गईं। सभी रंग–बिरंगे कपड़े पहने थीं।"[4] समाज सुधारकों की प्रवृत्ति का चित्रण कर वातावरण का सृजन किया है– "काम कम करने और प्रचार द्वारा नाम और यश अधिक पाने की जो प्रवृत्ति आजकल बहुत से तथाकथित समाज–सुधारकों में

---

1 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9

2 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 82

3 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 214

4 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 215

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

साधारणतः पाई जाती है।"[1] इस प्रकार 'जहाज का पंछी' में यथार्थ वातावरण का सृजन कर समाज की विभिन्न विकृतियों का उद्‌घाटन किया गया है।

'ऋतुचक्र' उपन्यास में सामाजिक वातावरण के सृजन द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की प्रमुख मान्यताओं एवं विभिन्न व्यक्तियों का मनोविश्लेषण प्रकट किया गया है। रूढ़िवादी समाज का चित्रण इस प्रकार किया है– "मेरे मरने के बाद मुझे पिंड देने वाला कोई नहीं है, जमीन–जायदाद बहुत है, पर भगवान ने एक भी बेटा नहीं दिया और न बेटी ही दी। एक–एक करके तीन शादियाँ कर चुका, पर एक भी औरत न बची। एकदम अकेला हूँ, मिस्टर चटर–चैटर्जी शाब सचमुच बिन घरनी घर भूत का डेरा हो गया है। रात में मेरे घर में उल्लू बोलने लगे हैं। मैं बहुत घबरा गया हूँ, शाब!"[2] बदलते जीवन मूल्यों के चित्रण द्वारा भी वातावरण का सृजन किया गया है– "पिछले सभी आदर्श, मूल्य और मान्यताएँ या तो ढह चुकी हैं या तेजी से ढह रही हैं बदले में एक भी नये मूल्य या नये आदर्श का निर्माण नहीं हो पाया है।"[3] ग्रामीण क्षेत्र के समाज चित्रण द्वारा वातावरण का सृजन किया गया है– "गाँव के निवासी कुछ तो मेले में जाने की तैयारी कर रहे थे; कुछ गायों और भैंसों को सानी–पानी दे रहे थे; कहीं कुछ स्त्रियाँ छोटी सी अगनाई में जमाए गए पत्थर के ऊखल में धान कूट रही थी; कहीं कोई लड़की लहँगे में फिरकी देकर और सिर पर फैंटा मारकर या तो छोटी–छोटी, पतली–पतली लकड़ियाँ तोड़ रही थी या हँसिया से घास छील रही थी, दो–एक आवारा कुत्ते यात्रियों पर भूँक रहे थे।"[4] इसी प्रकार वर्तमान समाज के चित्रण द्वारा भी वातावरण का सृजन किया गया है– "सर्वत्र केवल भेद,

---

1 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 310

2 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 42

3 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 95

4 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 146

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

विरोध, वैमनस्य, वितृष्णा, विच्छेद विनाश, हिंसा–प्रतिहिंसा, वैयक्तिक मृत्यु और सामूहिक महामरण का भैरव राग ही प्रलय–ताल में बजता हुआ सुनाई देता है।"[1]

'भूत का भविष्य' उपन्यास में सामाजिक वातावरण सृजन कर नायक भूतनाथ का विश्लेषण किया है। वह समाज की प्रताड़ना से पीड़ित नवयुवक है। समाज में फैली जातिवाद की संकीर्ण मानसिकता का वर्णन किया है– "मैं और मेरे घरवाले जहाँ भी जाते वहीं दुरदुराये जाते, 'जा साला चमार!' सबके मुँह से यही एक गाली सब समय सुनते–सुनते मेरे कान पक गये।"[2] भूतनाथ के माध्यम से निम्न वर्ग का उच्च वर्ग के प्रति घृणा की भावना प्रकट कर भी वातावरण का सृजन किया है– "तुम लोग उन आदिकालीन, भीषणाकार जन्तुओं की तरह हो, जो करोड़ो वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर छाये हुए थे और जिनका एकमात्र उद्देश्य अपने सभी अंगों को आवश्यकता से बहुत अधिक पुष्ट करके विकट महादानवीय आकार धारण करना, पृथ्वी के अन्य सभी जीव–जन्तुओं को त्रस्त करके जगदल पत्थर की तरह अचल और अटल होकर अनन्त काल के लिए पृथ्वी पर जमे रहना और प्रकृति की सारी प्रगतिशील योजनाओं के अटूट–क्रम को सदा के लिए रूँधकर स्वयं स्थायी और शाश्वत बन जाता था।"[3] अछूतों के अछूतपन को कायम रखने के कारणों के चित्रण से भी वातावरण का सृजन किया गया है– "अछूतों को यह बात गहराई से समझ लेनी होगी कि अपनी हालत के लिए सवर्णों या देश के नेताओं या सरकार को दोष देने के बजाय अगर सब अपने भीतर गहराई से देखें तो पता चलेगा कि हमी अपने अछूतपन को कायम बनाये रखने के लिए दोषी ठहरते हैं। क्या यह सच नहीं कि हरिजनों के बीच भी ऐसे बहुत से (बल्कि सभी) लोग हैं जो अपने से गिरी हुई हालत वाले हरिजनों को अछूत मानते हैं।"[4]

---

1 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 246

2 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 80

3 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 95

4 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 146

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

इस प्रकार इलाचन्द्र जोशी ने वाह्य और आन्तरिक वातावरण का सृजन अपने उपन्यासों में किया है। उन्होंने आन्तरिक वातावरण द्वारा व्यक्ति की मनःस्थितियों का विश्लेषण किया है और वाह्य वातावरण के माध्यम से मनःस्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव को चित्रित किया है। वाह्य वातावरण ही है, जो व्यक्ति की मनःस्थिति को परिवर्तित करने एवं उसे उद्देलित करने का कार्य करता है। वातावरण सृजन द्वारा उन्होंने व्यक्ति की दमित कामनाओं, उन पर पड़ने वाला प्रभाव, प्रेम की उत्कंठा, सामाजिक संकीर्णता, पूँजीवादी परिवेश, वासना, मानसिक रूग्णता आदि को चित्रित किया है। पात्रों के व्यक्तित्व का चित्रण करने व कथानक में यथार्थता व सजीवता का आभास दिलाने में उनका वातावरण सक्षम है।

❖❖❖❖

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/